4

पवित्र आत्मा की शान्ति

(यूहन्ना 14)

''और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं'' (आयतें 16-18)।

अपने प्रेरितों पर यह प्रगट करने के बाद कि वह जा रहा है, यीशु ने तुरन्त उनके पास पवित्र आत्मा को भेजने की प्रतिज्ञा की। यह प्रतिज्ञा उन सब बातों से बढ़कर थी जो यीशु ने उन्हें बताई थीं और इसमें सबसे बड़ा संदेश यह था जो यीशु ने अपने प्रेरितों को अटारी वाले कमरे में दिया।

अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु चला गया। दस दिन बाद, पिन्तेकुस्त के दिन, परमेश्वर का राज्य आया। उस ऐतिहासिक दिन में आत्मा का बपतिस्मे का माप पाकर प्रेरित पवित्र आत्मा से भर गए। तुरन्त बाद प्रेरितों ने सारे संसार में परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के काम को आरम्भ कर दिया। उनका काम इतना बुनियादी और टिकाऊ था कि इसे महिमामय अर्थात व्यापक शब्दों में कहा गया। यीशु ने पहले अपने प्रेरितों से कहा था, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे'' (मत्ती 19:28)। पौलुस ने बाद में लिखा कि परमेश्वर का घराना ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है'' बनाए गए हो (इफिसियों 2:20)। स्पष्टतया वह बुनियादी काम जो प्रेरितों को करना था उसमें इसे पूरा करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ, परमेश्वर की प्रेरणा से अगुआई और पवित्र सहभागिता से कम कुछ भी नहीं चाहिए था।

विशेषकर, इस प्रतिज्ञा का जो यीशु ने अपने प्रेरितों से की उनके लिए क्या अर्थ था? हमारे लिए इसका क्या अर्थ है? पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हें क्या शान्ति मिलनी थी?

ईश्वरीय सहायता

पहले तो उसने ईश्वरीय सहायता की शान्ति देनी थी। यीशु ने कहा, ''मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा'' (14:16क)। ''सहायक'' शब्द उसके आने की इस संक्षिप्त बातचीत में दो बार पवित्र आत्मा के लिए लागू किया गया है (14:16, 26)। ''सहायक'' के लिए यूनानी शब्द *paraklēton* है, जो वही शब्द है जिसका इस्तेमाल 1 यूहन्ना 2:1 में यीशु के वर्णन के लिए हुआ है।

यीशु ने पवित्र आत्मा को ''एक और सहायक'' कहा जिसमें वही गुण हैं जो स्वयं उसमें दिखाए गए हैं। आत्मा ने वैसी ही कुछ अगुआई देनी थी जो यीशु ने दी।

बिना पवित्र आत्मा की सहायता के प्रेरित अपने विलक्षण कार्य को नहीं कर सकते थे। राज्य में उनका काम इतना महत्वपूर्ण, इतना ईश्वरीय और इतना अनन्त था कि उसे केवल मानवीय सामर्थ से नहीं किया जा सकता था। केवल एक झलक से ही प्रेरितों को समझ आ सकता था कि जो काम मसीह ने उन्हें करने को दिया है वह उनके लिए बहुत बड़ा है। उन्हें अपने साथ काम करने के लिए अपने से किसी मज़बूत की आवश्यकता थी। मसीह ने उन्हें आश्वस्त किया कि जिस सहायक की उन्हें आवश्यकता है वह पवित्र आत्मा है।

बनी रहने वाली उपस्थिति

इसके अलावा पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को बनी रहने वाली उपस्थिति की शान्ति देनी थी। यीशु ने प्रतिज्ञा की, ''मैं पिता से विनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे'' (14:16क)। वह उन से कह रहा था, ''अब से तुम्हें यही शान्ति मिलेगी।'' उसके शब्द स्पष्ट थे कि ''मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं'' (14:18)।

आत्मा ने उनके साथ रहना था और कुछ हद तक यीशु का स्थान लेना था। प्रभु ने अपने चेलों को बताया, ''मैं तुम्हारे पास आता हूं'' (14:18)। जिसका अर्थ यह है कि उसने पवित्र आत्मा में होकर उनके साथ रहना था।

विगत तीन वर्षों से प्रेरित यीशु की व्यक्तिगत उपस्थिति पर निर्भर थे। उनका विश्वास था कि यदि प्रभु उनके साथ है, तो मृत्यु भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। उन्होंने उसे लाज़र को मुर्दों में से जिलाते देखा था। उन्होंने उसे गलील में तूफ़ान को शान्त करते देखा था। दुष्ट आत्माओं को निकालते और भीड़ को खाना खिलाते देखने के लिए वे उसके साथ थे। यीशु के साथ ऐसे ऐसे अनुभवों को पाकर अपने पास से उसका जाना उनके लिए बड़े दुख की बात होना था। सम्भवतया वे उसके बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

परमेश्वर की प्रेरणा से अगुआई

तीसरा, पवित्र आत्मा ने उन्हें परमेश्वर की प्रेरणा से अगुआई की शान्ति देनी थी। यीशु ने पवित्र आत्मा को ''सत्य का आत्मा'' (14:17) कहा। उसने आगे कहा, ''परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा'' (14:26)। पवित्र आत्मा की सहायता दोहरी होनी थी, यानी इसने पीछे तक पहुंचना था ताकि वे जो कुछ उन्होंने सीखा था उसे याद कर सकें और अतिरिक्त सच्चाई देने के लिए आगे को पहुंचना था। आत्मा के निर्देश से उन्होंने प्रचार करने और सिखाने के कार्य में योग्य होना था। जिसके लिए उन्हें बुलाया गया था।

यह जानने से बड़ी बात कोई नहीं है कि हमारे पास परमेश्वर की सच्चाई है। प्रेरितों को इस आश्वासन की आवश्यकता थी, और वैसे ही हमें भी है। परमेश्वर की प्रेरणा से पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को सच्चाई दी। परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए लेखों से अध्ययन करने और सच्चाई से उन्हें मानने के द्वारा हम पर सच्चाई प्रगट की गई है। जब हम परमेश्वर की सच्चाई में टिके होते हैं तो हम पवित्र आत्मा की शान्ति में स्थिर हैं।

अचूक निरन्तरता

चौथा, पवित्र आत्मा ने उन्हें अचूक निरन्तरता की शान्ति दी। पवित्र आत्मा प्रेरितों के द्वारा पहले भी काम कर रहा था। यीशु ने कहा, ''तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा'' (14:17ख)। उन्होंने इसे यीशु के जीवन में देखा था और उसके द्वारा प्रचार किया, सिखाया और आश्चर्यकर्म किए थे; परन्तु थोड़ी ही देर में उसने और पूर्ण रूप में उन पर आना था और पूरे मसीही युग के दौरान उनके साथ रहना था। आत्मा के बपतिस्मे का माप प्रेरितों पर दिए जाने पर, उन्होंने दूसरों को आत्मा के दान देने के योग्य हो जाना था। इन दानों के द्वारा आरम्भिक कलीसिया ने मज़बूत होना था। इसके अलावा पवित्र आत्मा ने पिता की ओर से छुटकारे की शपथ के रूप में हर मसीही में रहना था (प्रेरितों 2:38; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के साथ और सब मसीही लोगों के साथ समय के अन्त तक व्यक्तिगत रूप में रहना था। पिता के दाहिने हाथ यीशु के अपने आसन पर बैठ जाने पर, पवित्र आत्मा ने यीशु के चेलों के मनों में अपना निवास बनाना था।

सारांश

अपनी मृत्यु की तैयारी करते हुए यीशु ने अपने प्रेरितों को सबसे बड़ा आश्वासन दिया। उसने पवित्र आत्मा को, सहायता की उसकी शान्ति, व्यक्तिगत उपस्थिति, प्रकाशन और निरन्तरता के साथ भेजने की प्रतिज्ञा की। परोक्ष रूप में इस प्रतिज्ञा का पूरा होना हम तक होता है। हमारे अन्दर अपने निवास और प्रकाशन के द्वारा पवित्र आत्मा जिसे उसने हमें दिया है, आवश्यकता के अनुसार हमें सहायता देता है। आत्मा की हमारे प्रभु की प्रतिज्ञा मसीही युग के लिए की गई यीशु की सबसे बड़ी प्रतिज्ञाओं में से एक है।

''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं'' (प्रेरितों 2:1-3)।

''सो सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती जाती थी'' (प्रेरितों 9:31)।